चांग का कागज़ी टट्टू

लेखक : एलेनॉर

चांग का कागज़ी टट्टू

चांग अपने दादाजी लाई के साथ
गोल्ड डिच होटल के किचन में
आलू छील रहा था.
अचानक चांग रुका.
"मुझे घोड़ों की आवाज़ आ रही है!"
वो चिल्लाया.
फिर वो दौड़ा हुआ दरवाज़े तक गया.

"काश मेरे पास एक टट्टू होता,"
उसने दादा लाई से कहा,
"फिर मुझे कभी अकेलापन
महसूस नहीं होता."
"अगले साल," दादा लाई ने कहा,
"खदान मज़दूर अपने
परिवारों को यहाँ लेकर आएंगे,
फिर तुम्हें अकेलापन नहीं लगेगा."
पर चांग उनके जवाब से आश्वस्त नहीं हुआ.
उसे वो दिन साफ़ याद था जब दादा लाई
और वो सैन फ्रांसिस्को आए थे.
उसे याद था कि उस दिन कुछ
लड़कों ने उन पर पत्थर फेंके थे.

"अमरीकी बच्चे हमसे घृणा करते हैं,“
चांग ने कहा.
दादा लाई ने अपना सर हिलाया और कहा,
"वे हमसे नफरत नहीं करते हैं," उन्होंने कहा,
"वे लोग हमें समझते ही नहीं हैं."

"अगर मेरे पास एक टट्टू होता,
तो मेरे पास वाकई एक दोस्त होता,"
चांग ने कहा.
दादा लाई मुस्कुराये.
"देखो अभी तुम्हारे कुछ दोस्त तो हैं ही,"
उन्होंने कहा.
"तुम्हारा टीचर है,
फिर नाई,
और लोहार है,
हाँ, बिग पीट को मत भूलना."
"पर वे सभी मुझ से उम्र में बहुत बड़े हैं,"
चांग ने कहा.
"अगर छोटा टट्टू होता
तो उसके साथ खेलने में
मुझे मज़ा आता."

दादा लाई ने चूल्हे के ऊपर
लगी पेंटिंग की ओर इशारा किया.
"देखो उस टट्टू की पेंटिंग को.
अभी उसे निहारने की ही
हमारी औकात है," उन्होंने कहा.
"अब फटाफट आलू छीलो.
जल्द ही भूखे खदान मज़दूर
मेरा स्वादिष्ट खाना खाने यहाँ आएंगे."

चांग ने दादाजी के कहे अनुसार किया.
उसने खाने की मेज़ भी सजाई.
वो कुँए से पानी निकालकर लाया.
वो चूल्हे के लिए लकड़ियां भी लाया.

पर उसके दिमाग में

सिर्फ एक बात ही घूमती रही

काश उसके पास एक छोटा टट्टू होता.

मुश्किल

कुछ मज़दूर असभ्य थे.

वे चांग की चोटी खींचते थे.

चांग अपनी चोटी को

उनसे दूर रखने की कोशिश करता था.

वो लोगों से हमेशा
आदर के साथ पेश आता था.
जब कोई खदान मज़दूर
उससे नाम पूछता,
तो चांग बहुत अदब से झुकता और कहता,
"ज़नाब, मेरा नाम चांग है."

एक खदान मज़दूर ने
अपने घुटने पर ज़ोर से हाथ मारा.
"क्या इससे तुम्हारी आंख
की पुतली फूली?" वो चिल्लाया.
वहां मौजूद सभी लोग हँसे.

चांग दौड़कर किचन में गया.
"मैं चीन वापिस जाना चाहता हूँ,"
उसने कहा.
दादा लाई ने चांग को अपने कलेजे से
लगा लिया.

"चांग तुम्हें पता है कि हम
वापिस नहीं जा सकते,"
दादा लाई ने कहा.
"चीन में इस समय युद्ध चल रहा है."
"पर वो खदान मज़दूर
इतने असभ्य क्यों हैं?"
चांग ने पूछा.
दादा लाई ने एक लम्बी सांस भरी.
"वे अपने हृदयों को
अपने घरों पर ही छोड़ आये हैं,"
उन्होंने कहा.
"अब वो सिर्फ चमकते सोने
के बारे में ही सोचते हैं.
यहाँ सब को सोने का बुखार चढ़ा है.
उससे लोग कुछ पगला गए हैं."

उसके बाद वो मुख्य सड़क पर
पढ़ने के लिए गया.
रास्ते में चांग कुछ देर
शहर की अस्तबल के घोड़ों को
निहारने के लिए रुका.
"जब मेरे पास अपना एक टट्टू होगा,
तो मैं भी उसे यहीं रखूंगा."

खाना ख़त्म होने के बाद
चांग एक बड़े टब में नहाया.
फिर उसने अपनी चोटी बनाई
और धुले-साफ़ कपड़े पहने.

टीचर सी-यौ, चांग को अंग्रेजी

लिखना-पढ़ना सिखाते थे.

चांग को उससे सख्त नफरत थी.

उसे अंग्रेजी के अक्षर

कीड़े-मकोड़ो जैसे

कागज़ पर रेंगते हुए दिखते थे.

बच्चा

आदमी

पहाड़

घोड़ा

चांग को चीनी शब्दों को नुकीले ब्रश और काली

स्याही से पेंट करने में आनंद आता था.

चीनी भाषा में हरेक शब्द

देखने में एक चित्र लगता था.

tsu - बच्चा, jen - आदमी, shan - पहाड़.

जब वो ma - घोड़े पर आया,

तब चांग, दिन में सपना देखने लगा.

तुरंत टीचर सी-यौ ने
छड़ी को चांग की पीठ पर मारा.
"अगर तुमने इस तरह
खेलना नहीं छोड़ा,
फिर तुम खाली डिब्बा रहोगे
तुम किसी लायक नहीं बनोगे."
यह सुनकर चांग ने
अपना थूक निगला.
उसे खाली डिब्बा बने रहने
का कोई गम नहीं था.
उसे सिर्फ एक छोटा टट्टू चाहिए था.

उस रात को चांग ने अपने
तकिये को ऐसे गले लगाया
जैसे वो उसका टट्टू हो.
उसे लगा जैसे वो अपने टट्टू की
मुलायम नाक रगड़ रहा हो
और उसकी सांस सुन रहा हो.

बिग पीट

जब बिग पीट गोल्ड डिच होटल में आया
तब चांग को कुछ अच्छा लगा.
चांग ने बिग पीट जितना ऊंचा
और ताकतवर आदमी पहले
कभी नहीं देखा था.
बिग पीट ने छोटे चांग की
न कभी चोटी खींची
और न ही उसे कभी चिढ़ाया.

अब गोल्ड डिच होटल में
बहुत भीड़ हो गयी थी.
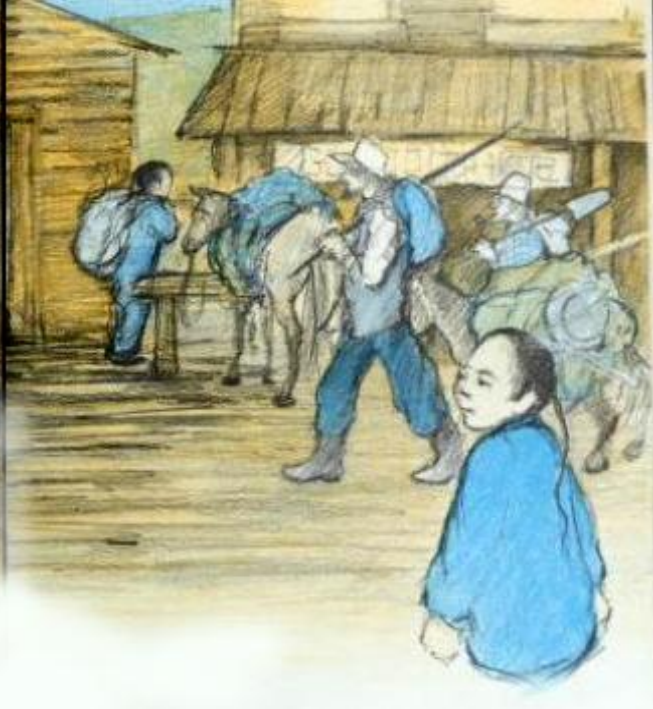
वहां पर रोज़ और
खदान मज़दूर आने लगे.

वो पहाड़ों से सोने का
अयस्क खोदकर लाते,
फिर नदियों में
उसे साफ़ करते.

एक दिन बिग पीट ने चांग को
सोने के कुछ बड़े टुकड़े दिखाए.

वो बिल पीट के तराज़ू पर
अपने सोने को तोलते थे.
कई बार सोने की छोटी कनियाँ
ज़मीन पर गिर जाती थीं.
पर खदान मज़दूरों की रूचि
सोने के बड़े टुकड़ों में ही होती थी.

फिर चांग के दिमाग में एक आईडिया आया.
"बिग पीट, क्या तुम मुझे सोना
खोजना सिखाओगे?" उसने पूछा.
"मुझे एक टट्टू खरीदने के लिए सोना चाहिए."
बिग पीट ने चांग की ओर देखा.
"देखो, टट्टू बहुत महंगा होता है," उसने कहा.
"तुम्हारा बहुत एहसान होगा," चांग ने कहा.
"मैं तुम्हारा केबिन साफ़ किया करूंगा,
तुम्हारे फर्श पर पोछा लगाया करूंगा."
यह सुनकर बिग पीट हंसा.
"देखो, अगर तुम्हारे दादाजी इज़ाज़त देंगे.
तो मैं कल तुम्हें अपने साथ ले चलूँगा."

चांग दौड़ता हुआ
गोल्ड डिच होटल गया.
"कृपा कर दादाजी मुझे जाने दें,"
चांग ने दादाजी से प्रार्थना की.
"ठीक है," दादाजी ने कहा.
"सिर्फ एक बार," उन्होंने कहा.
"हो सकता है तुम्हारी तकदीर
काम कर जाए."

फिर बिग पीट ने चांग को
अपने घोड़े पर बैठाया.
"हा-हा," वो चिल्लाया,
और वो आगे बढ़े.

सोने की तलाश

अगले दिन सुबह-सुबह
दादा लाई ने चांग और बिग पीट
का टिफ़िन पैक कर दिया.
चांग ने सोना रखने के लिए
एक थैला लिया.

आगे जाकर वो एक
गड्ढे के पास पहुंचे.
वहां बिग पीट ने
चांग को एक बेलचा और बाल्टी दी.
वहां की ज़मीन पत्थर जैसी कठोर थी.

बिग पीट ने कुदाल से
ऊपर की सख्त चट्टान को तोड़ा.
फिर चांग ने नीचे की मिट्टी
को अपने बेलचे से भरा.
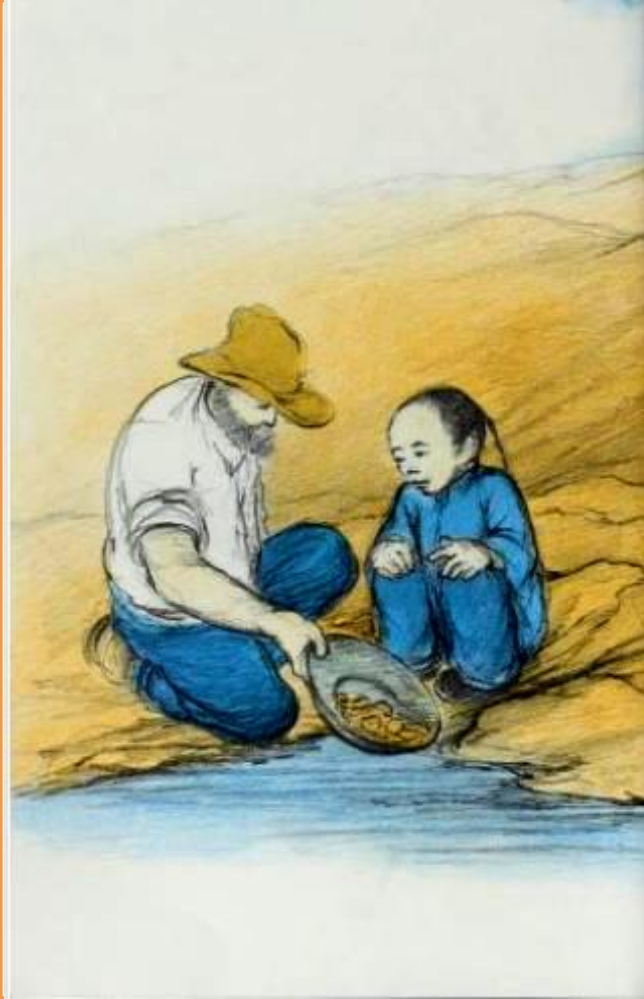
उसके बाद बिग पीट ने
चांग को मिट्टी में से सोना साफ़
करने की तकनीक सिखाई.
उसने कुछ मिट्टी एक परात में डाली.
फिर उसने पानी में परात को
गोल-गोल घुमाया.
जब मिट्टी धुलकर निकल गई
तब कुछ रेत और कंकड़ ही बचे.
पर उसमें सोने की
कोई कनी नहीं थी.

चांग ने बड़ी मेहनत से काम किया.

सूरज बहुत तेज़ी से चमकने लगा.

उसके चेहरे से पसीना बहने लगा

और उसके हाथों में छाले पड़ गए.

"थोड़ा धीरे काम करो, दोस्त,"

बिग पीट ने कहा.

पर चांग उसी रफ़्तार से

काम करता रहा.

उसे छोटा टट्टू जो खरीदना था!

अचानक, चांग ज़ोर से चिल्लाया!

"मिल गया! सोना!"

सोने की कुछ कनियाँ, परात के कंकड़ों और रेत में चमक रही थीं. चांग ने सावधानी से उन्हें अपने थैले में रखा.

फिर चांग और बिग पीट
घोड़े पर सवार होकर तेज़ी से
गोल्ड डिच होटल वापिस आये.
"अब मैं अपना
टट्टू खरीद सकता हूँ!"
चांग चिल्लाया.

चांग ने अपने ख़ज़ाने को
किचन की मेज़ पर सजाया.
बिग पीट ने फूंक मारकर
उसकी सारी रेत उड़ा दी.

जो बचा था उसे चांग ने घूरा.
"इतने सोने से तो एक छोटी बकरी भी नहीं
आएगी,"उसने निराश होते हुए कहा.
"अब मैं टट्टू कभी नहीं खरीद पाऊंगा."

सचमुच का टट्टू

सुबह को चांग ने
अपना वादा पूरा किया.
उसने झाड़ू लेकर बिग पीट
का केबिन अच्छी तरह साफ़ किया.

अचानक उसे फर्श के तख्तों
की दरारों में कुछ चमकती चीज़ें दिखीं.

चांग ने नीचे झुककर देखा.
"सोना!" वो फुसफुसाया.

सोने के वो टुकड़े
पिन के मत्थे जितने बड़े थे
पर वो बहुत सारे थे.
शायद वो उनसे अपना टट्टू खरीद पाए.
उसने सोने के उन छोटे टुकड़ों को
अपनी बाल्टी में रखा.
फिर वो दौड़कर दादाजी के पास आया.
"अब मैं ज़रूर टट्टू खरीद पाऊंगा!"
चांग चिल्लाया.

दादा लाई ने चांग
को कठोर नज़र से देखा.
"तुम्हें वो सोना बिग पीट को वापिस
करना पड़ेगा," उन्होंने कहा.
"क्योंकि वो सोना तुम्हें
उसके केबिन में मिला था."
"हाँ, मुझे वैसे ही करना चाहिए,"
चांग ने कहा.
टट्टू खरीदने का चांग का सपना,
अब धूमिल हो गया था.

"मुझे तो इस बात का
कोई अंदाज़ नहीं था,
कि मेरे फर्श की दरारों में
इतना सोना दबा होगा."

बिग पीट उस सोने को लेकर
सैक्रामेंटो के बैंक में गया.

एक दिन दोपहर के समय
चांग को घोड़े के पैरों की
टप-टप सुनाई दी.
"वो बिग पीट का घोड़ा होगा,"
दादा लाई ने कहा.
"मुझे पता है," चांग ने कहा.
फिर धीमे-धीमे वो दरवाज़े पर गया.

चांग ने टट्टू के चित्र को उतारा
अब उसके सपने पर पानी फिर गया था.
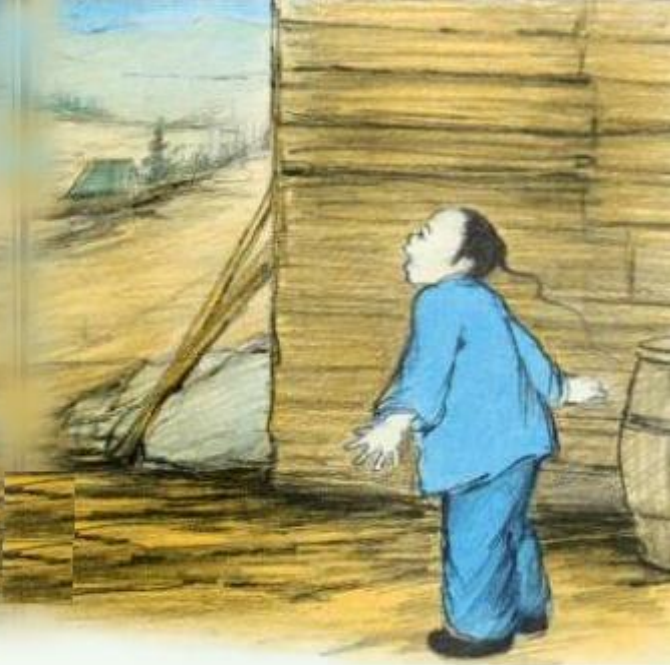
बिग पीट अपने घोड़े पर आ रहा था.
उसके साथ के सुन्दर टट्टू भी था.

"यह टट्टू बिल्कुल तुम्हारा है," बिग पीट ने कहा.
"इसे मैंने तुम्हारे सोने के हिस्से से खरीदा है."

चांग ने बड़े प्यार से
टट्टू की गीली नाक को सहलाया.
टट्टू ने भी चांग की उँगलियों को रगड़ा
और एक धीमी आवाज़ की.

फिर चांग के चेहरे पर
एक बड़ी मुस्कान फैली.
"लगता है, वो मुझे चाहता है,"
उसने कहा.

बिग पीट ने चांग को टट्टू
की पीठ पर बैठाया.

चांग को लगा कि वो
ख़ुशी से मर जायेगा.
"मेरा अपना टट्टू!" वो चिल्लाया.
"मैं उसको पेंग्यो कहकर बुलाऊंगा."
फिर चांग झुका और उसने
टट्टू के कान में उसका नाम फुसफुसाया.

"मुझे तुमसे बहुत प्रेम है पेंग्यो."
पेंग्यो ने धीमी आवाज़ की
जैसे उसने चांग की बात समझी हो.

लेखक का नोट

चीन में युद्धों और क्रांति के कारण 1850 और 1864 के बीच हज़ारों चीनी लोग अमरीका आये. उनमें से बहुत से लोगों ने "गोल्ड माउंटेन" में कमाई की. उन्होंने कैलिफ़ोर्निया को यह नाम दिया था. उनमें से बहुत से चीनी बढ़ई, किसान, इंजीनियर, शिक्षक और डॉक्टर्स थे. उनमें से कई ने प्रथम रेल की पटरी बिछाने का काम भी किया. क्योंकि चीनियों को अमरीका में कोई कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं थे इसलिए कभी-कभी उनके साथ लोगों ने क्रूर व्यवहार भी किया.

बिग पीट जैसे अमरीकी खदान मज़दूर अक्सर फर्श पर सोने का बुरादा छोड़ जाते थे. चीनी सफाई कर्मचारी अक्सर उस बुरादे को खुद के लिए इकट्ठा करते थे.
वैसे चीनियों ने अमरीका और विशेषकर कैलिफ़ोर्निया के विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया, पर शुरू के चीनी आप्रवासियों में से बहुत कम लोग ही अधिक धन कमा पाए.